# नीतिश्लोका:

[नीति का अर्थ है समाज तथा व्यक्ति को उन्नति के मार्ग पर ले जाने वाले सिद्धान्त । इन्हे संस्कृत के नीतिश्लोकों में अच्छी तरह प्रकट किया गया है । समाज को गिराने वाले असत् तत्त्वों से सावधानी तथा उसे ऊँचा उठाने वाले सत्तत्त्वों के प्रति प्रवृत्ति दिलाना नीति का उद्देश्य है । नीतिश्लोकों में दोनों प्रकार की बातें होती हैं । विवकशील व्यक्ति नीति के मार्ग पर चलकर स्वयं तो प्रतिष्ठित होता ही है, समाज को भी प्रतिष्ठा दिलाता है । इसीलिए नीतिश्लोकों का महत्त्व है । ये श्लोक कण्ठाग्र रहें तो जीवन के पद-पद पर मार्गदर्शन करते हैं ।]

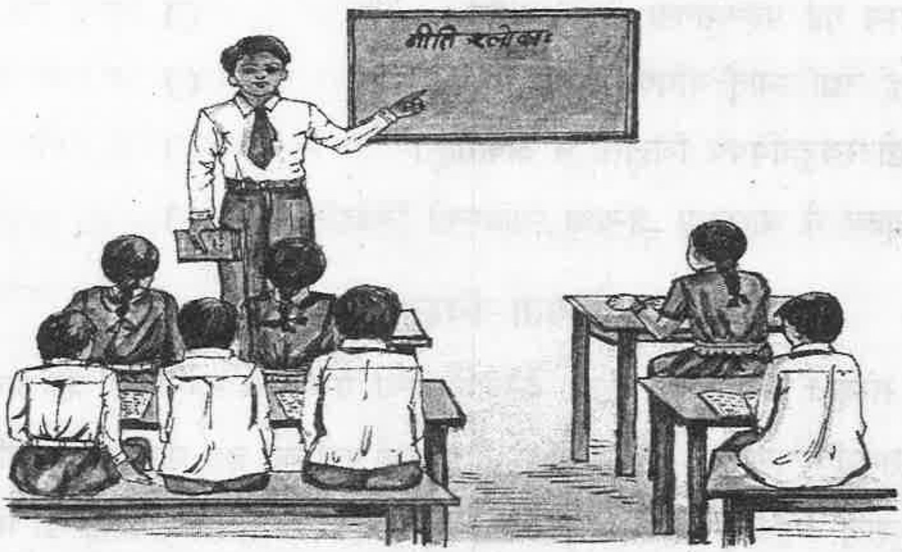


1. पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं धनम् ।
   कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद् धनम् ॥1॥

2. न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः
   वृद्धाः न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।

धर्मो न सः यत्र न सत्यमस्ति ,

सत्यं न तत् यच्छलमभ्युपैति ॥ 2॥

3. गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति

ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।

आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः

समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेया : ॥ 3 ॥

4. आपत्काले तु सम्प्राप्ते यत् मित्रं मित्रमेव तत् ।

वृद्धिकाले तु सम्प्राप्ते अमित्रोऽपि सुहृद् भवेत् ॥ 4 ॥

5. प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।

तस्माद् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥ 5॥

6. वाणी रसवती यस्य यस्य श्रमवती क्रिया ।

लक्ष्मीः दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम् ॥6॥

7. विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा

सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ।

यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ

प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥8॥

8 दुर्जनेन समं वैरं प्रीतिं चापि न कारयेत् ।

उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम् ॥

## शब्दार्थाः

पुस्तकस्था – पुस्तक में स्थित

परहस्तगतम् – दूसरे के हाथ में गया हुआ

कार्यकाले – कार्य के समय में

समुत्पन्ने – उत्पन्न होने पर

तद् – वह

यत्र – जहाँ

अभ्युपैति – से जुड़ता है

गुणज्ञेषु – गुणीजनों में /गुणों को जानने वालों में

निर्गुणम् – निर्गुणी व्यक्ति को

प्राप्य – पहुँच कर के

नद्यः – नदियाँ

आस्वाद्यतोयाः – स्वादयुक्त जलवाली

प्रवहन्ति – बहती हैं

आसाद्य – पहुँच कर; पाकर

अपेयाः – न पिये जाने योग्य

आपत्काले – विपत्ति के समय में

सम्प्राप्ते – आने पर

| | | |
|---|---|---|
| यत् | – | जो |
| मित्रम् | – | मित्र, दोस्त |
| तत् | – | वह |
| वृद्धिकाले | – | उन्नति या सुख के समय में |
| सम्प्राप्ते | – | समय आने पर |
| अमित्रोऽपि | – | मित्र न होने पर भी, शत्रु भी |
| सुहृद् | – | मित्र |
| भवेत् | – | बन जाता है |
| प्रियवाक्यप्रदानेन | – | प्रिय बोली बोलने से |
| तुष्यन्ति | – | संतुष्ट होते हैं |
| जन्तवः | – | सभी प्राणी |
| वक्तव्यम् | – | कहना चाहिए |
| वचने | – | वचन में |
| दरिद्रता | – | गरीबी/ कंजूसी, कमी |
| तस्माद् | – | उससे |
| वाणी | – | बोली |
| रसवती | – | मधुर, रस युक्त |
| यस्य | – | जिसका |
| श्रमवती | – | श्रम युक्त / परिश्रम युक्त |

| | | |
|---|---|---|
| क्रिया | – | काम |
| लक्ष्मीः | – | धन-सम्पत्ति / धन की देवी |
| दानवती | – | दानशील |
| विपदि | – | विपति में, कठिनाइयों में |
| अभ्युदये | – | उन्नति में |
| सदसि | – | सभा में |
| वाक्पटुता | – | वाणी की कुशलता, बोलने में कौशल |
| युधि | – | युद्ध में |
| विक्रमः | – | शौर्य, वीरता |
| यशसि | – | यश में, कीर्ति में |
| व्यसनम् | – | आसक्ति |
| प्रकृतिसिद्धम् | – | स्वभाव से सिद्ध, स्वाभाविक |
| इदम् | – | यह |
| महात्मनाम् | – | महान लोगों का |
| दुर्जनेन | – | दुष्ट के |
| समम् | – | साथ |
| वैरम् | – | शत्रुता |
| प्रीतिम् | – | लगाव |
| कारयेत् | – | करना चाहिए |

| | | |
|---|---|---|
| उष्णः | – | गर्म |
| दहति | – | जलाता है |
| चाङ्गारः | – | और जलता हुआ कोयला |
| शीतः | – | ठंडा |
| कृष्णायते | – | काला करता है |
| करम् | – | हाथ को |

**सन्धि-विच्छेदः / पदविच्छेदः –**

| | | |
|---|---|---|
| समुत्पन्ने | = | सम् + उत्पन्ने |
| सत्यमस्ति | = | सत्यम् + अस्ति |
| यच्छलमभ्युपैति | = | यत् + छलम् + अभि + उप + एति |
| समुद्रमासाध | = | समुद्रम् + आसाद्य |
| भवन्त्यपेयाः | = | भवन्ति + अपेयाः (यण् सन्धिः) |
| मित्रमेव | = | मित्रम् + एव |
| आमित्रोऽपि | = | अमित्रः + अपि (विसर्ग सन्धि, पूर्वरूप) |
| धैर्यमथाभ्युदये | = | धैर्यम् + अथ + अभ्युदये |
| चाभिरुचिर्व्यसनम् | = | च + अभिरुचिः + व्यसनम् |
| प्रकृतिसिद्धमिदम् | = | प्रकृतिसिद्धम् + इदम् |
| चाङ्गारः | = | च + अङ्गारः (दीर्घसन्धि) |

## प्रकृति–प्रत्यय–विभागः

| | | |
|---|---|---|
| समुत्पन्ने | – | सम् + उत् + √पद् + क्त, सप्तमी एकवच |
| वदन्ति | – | √वद्, लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन |
| अभ्युपैति | – | अभि + उप + √इ, लट्लकार, एकवचन |
| गुणाज्ञेषु | – | गुण + √ज्ञा + क, सप्तमी बहुवचन |
| प्राप्य | – | प्र + √आप् + ल्यप् |
| प्रवहन्ति | – | प्र + √वह्, लट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवच |
| आसाद्य | – | आ + √सद् + णिच् + ल्यप् । |
| पेयाः | – | √पा + यत् प्रथमा बहुवचन (पुँ.) |
| सम्प्राप्ते | – | सम् + प्र + √आप् + क्त, सप्तमी एकवच |
| भवेत् | – | √भू, विधिलिङ् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन |
| तुष्यन्ति | – | √तुष्, लट्लकार, प्रथमपुरुष बहुवचन |
| वक्तव्यम् | – | √वच् + तव्यत् |
| श्रुतौ | – | √श्रु + क्तिन् स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन |
| कारयेत् | – | √कृ + णिच् विधिलिङ्, प्रथमपुरुष, एकवच |
| कृष्णायते | – | कृष्ण + क्यङ् (कृष्ण इव आचरति, कृष्णं करो |

# अभ्यासः

## मौखिकः

1. एकपदेन उत्तरं वदत –

   (क) केन समं प्रीतिं वैरं च न कारयेत् ?

   (ख) नद्याः जलं कदा अपेयं भवति ?

   (ग) वृद्धिकाले कः मित्रं भवेत् ?

   (घ) केन सह प्रीतिं न कुर्यात् ?

   (ङ) महात्मनाम् किम् लक्षणम् अस्ति ?

2. **प्रकृति-प्रत्यय विभागं कुरुत–**

   वदन्ति, भवन्ति, सम्प्राप्ते, कृष्णायते, प्रवहन्ति, गुणज्ञेषु ।

3. **श्लोकानां वाचनम् कुरुत ।**

4. **निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत–**

   रसवती, श्रमवती, वाकपटुता, विक्रमः, महात्मनाम्, दुर्जनेन, उष्णः कारयेत्, यशसि, क्रिया

## लिखितः

### पाठानुसारम्

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

   (क) के गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति ?

(ख) का आस्वाद्यतोयाः भवन्ति ?

(ग) प्रियवाक्यप्रदानेन के तुष्यन्ति ?

(घ) के धर्मं वदन्ति ?

(ङ) वृद्धिकाले कः मित्रं भवेत् ?

(च) सफलजनस्य क्रिया कीदृशी ?

(छ) सफलस्य नरस्य वाणी कीदृशी ?

**2. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) पुस्तकस्था तु या विद्या, .................... ।

(ख) गुणा गुणज्ञेषु .............. भवन्ति ।

(ग) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे ............ भवन्ति ।

(घ) अमित्रोऽपि सर्वे .............. ।

(ङ) विपदि धैर्यमथाभ्युदये ........... ।

**3. सन्धि / पदविच्छेदं कुरुत –**

(क) सत्यमस्ति = .......... + ............

(ख) अभ्युपैति = ............ + ............

(ग) मित्रमेव = ............ + ..........

(घ) चाङ्गारः = .............. + ..........

(ङ) अमित्रोऽपि = ............... + ..........

(च) भवन्त्यपेयाः = ................ + ..............

(छ) समुत्पन्ने = ................ + ..............

**4. प्रकृति–प्रत्यय–विभागं कुरुत–**

अभ्युपैति, भवन्ति, पेयाः, प्रवहन्ति, गुणज्ञेषु, प्राप्य, आसाद्य, सम्प्राप्ते ।

**5. अधोलिखितयोः श्लोकयोः आशयं हिन्दीभाषया लिखत–**

(क) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥

(ख) आपत्काले तु सम्प्राप्ते यत् मित्रं मित्रमेव तत् ।
वृद्धिकाले तु सम्प्राप्ते अमित्रोऽपि सुहृद्भवेत् ।

**6. परस्परमेलनम् कुरुत–**

| | |
|---|---|
| (क) वृद्धिकालः | (i) शुष्कः |
| (ख) दुर्जनेन | (ii) समृद्धिकालः |
| (ग) उष्णः | (iii) मित्रम् |
| (घ) सुहृद् | (iv) शौर्यः |
| (ङ) अमित्रः | (v) दुष्टेन |
| (च) विक्रमः | (vi) शत्रुः |
| (छ) रसवती | (vii) जीवनम् |
| (ज) जीवितम् | (viii) मधुरा |

7 अधोलिखितषु पदेषु शुद्धं पदं चित्वा लिखत–

यथा – गुणज्ञेसु, गुणज्ञेषु, गुणज्ञषु – गुणज्ञेषु

(क) लोकेषू, लोकेषु, लोकसु ............

(ख) मनुष्यानाम्, मनुष्याणाम्, मनुष्यणाम् .............

(ग) दुर्जनेन, दुर्जनेण, दुर्जणेन ...........

(घ) वृद्धीकाले, व्रद्धिकाल , वृद्धिकाले ...........

(ङ) महान्, महान, महानः ..........

(च) विपदि, वीपदि, विपदी ...........

## योग्यता–विस्तारः

नीतिश्लोक मानवजीवन में पद-पद पर दिशानिर्देश करते हैं । अतः विद्यार्थियों क जीवन की आवश्यकता में ही अधिकाधिक नीतिश्लोकों को कण्ठाग्र करना चाहिए । यह कुछ अतिरिक्त नीतिश्लोक दिये जाते हैं –

(1) अन्यायोपार्जितं वित्तं दश वर्षाणि तिष्ठति ।

प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं तद् विनश्यति ॥

आज भ्रष्टाचार से कई लोग दरिद्र से धनवान् बन जाते हैं किन्तु ऐसे लोगों के ध का रहस्य नियत समय पर खुल जाता है और उपार्जन करने वाले की सामाजिक निन्द तो होती ही है, वह धन भी किसी-न-किसी रूप में चला जाता है ।

(2) नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान् न शठाः न च मायिनः ।

न च लोकापवाद्भीता न च शश्वत् प्रतीक्षिणः ॥

इस श्लोक में लक्ष्य प्राप्ति न करने वाले लोगों की सूची दी गई है । तदनुसार आलसी, धूर्त, छल-प्रपञ्च करने वाले लोकापवाद (लोकनिन्दा) से डरने वाले तथा चिर काल तक प्रतीक्षा करते रहने वाले लोग जीवन में सफल नहीं होते। भाव यह है कि उद्यमी तथा परिश्रमी बनें ।

(3) अतिथिर्बालकः पत्नी जननी जनकस्तथा ।

पञ्चैते गृहिणः पोष्या इतरे च स्वशक्तितः ।।

इसमें गृहस्थ लोगों द्वारा अनिवार्य रूप से पालन-पोषण के योग्य लोगों की सूची दी गई है । वे हैं –अतिथि, बालक (अपना या किसी अन्य का बच्चा), पत्नी माता तथा पिता । जहाँ तक हो सके इन पाँचों के अतिरिक्त भी यथाशक्ति लोगों का पालन करें । आज के भौतिकवादी युग में यह कर्तव्य लोग भूल रहे हैं । भारतीय संस्कृति का यह लक्ष्ण है कि गृहस्थ लोग अपने साधनों का उपयोग उपकार में करें ।

(4) दरिद्रता धीरतया विराजते, कुरूपता शीलतया विराजते ।

कुभोजनं चोष्णतया विराजते, कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते ।।

धीरज होने से गरीबी भी शोभाजनक होती है । यदि अच्छा आचरण हो (शीलतया) तो कुरूपता पर भी लोगों का ध्यान नहीं जाता । यदि निकृष्ट या अपाच्य भोजन मिले तो उष्ण (गर्म) रहने पर उतना हानिकारक नहीं होता । इसी प्रकार स्वच्छ हो तो फटे-चिटे वस्त्र पर ध्यान नहीं जाता है । भाव यह है कि गरीबी में धीरज नहीं खोना चाहिए अच्छे आचरण से बदसूरती ढँक जाती है, गर्म भोजन करना चाहिए तथा सदैव साफ-सुथरे कपड़े पहनने चाहिए ।

◆◆◆